हुआ ? मजदूरों के वास्ते कुछ रहम पैदा हुई ? अगर मुझे यकीन होता कि हिन्दुस्तान में भक्ति के नाम पर ढोंग चल रहा है तो अपने देश की तरक्की के बारे में मैं मायूस हो जाता। लेकिन यह ढोंग नहीं, बल्कि नासमझी है। अगर लोग समझते कि भक्ति क्या है, तब तो देश का नक्शा ही बदल जाता।

धर्म का मूल्य

लोग बड़ी श्रद्धा से यात्रा करेंगे, उसके लिए पैसा खर्च करेंगे, लेकिन उन्हें ही खादी पहनने को कहा जाय तो वे कहेंगे कि खादी महँगी है। जरा सोचिये तो अगर आप सालभर में मिल का कपड़ा खरीदते हैं तो दस रुपये में मिलता है और खादी खरीदते हैं तो बीस रुपये में। जो दस रुपया ज्यादा खर्च हुआ, वह धर्म के काम में खर्च हुआ, ऐसा क्यों नहीं समझते ? तुम अमरनाथ की यात्रा के लिए जाते हो, उसमें पचास रुपये खर्च करते हो और उसे धर्म मानते हो। लेकिन आपके गाँव की एक गरीब औरत चर्खा कातती है, उसे घर बैठे रोजी मिलती है, उसके बच्चों को खाना मिलता है तो उसके सूत की बनी हुई महँगी खादी खरीदने में आप धर्म क्यों नहीं समझते ? भाइयो, मैं आप से पूछना चाहता हूँ कि आप इतनी बात भी नहीं समझते तो दूसरे कामों में पैसा खर्च करने से धर्म कैसे हो जायगा ? एक भाई बिहार से अमरनाथ की यात्रा के लिए आया तो उसने रेलवे को पैसा दिया और यहाँ आकर होटलवाले को भी दिया। फिर घोड़े पर बैठकर अमरनाथ गया। उसका सारा सबाब (पुण्य) तो घोड़े ने ही खा लिया। अगर वह अमरनाथ पैदल जाता, तब तो दूसरी बात थी। लेकिन ट्रेन में, मोटर में, घोड़े पर या गधे पर बैठकर जाने में क्या धर्म है ? आप खादी नहीं खरीदोगे तो गाँव की गरीब औरत और उसके बच्चे भूखों मरेंगे। इसलिए क्या खादी खरीदने में धर्म नहीं है ?

गरीबों को तसल्ली दें

मैंने सोचा कि मैं कल यहाँसे जाऊँगा और पता नहीं दुबारा कब आ सकूँगा। इसलिए अपने हृदय की बात आपके सामने रखूँ और भगवान से प्रार्थना करूँ कि वह आपको प्रेरणा दे कि आपके पास जो अपनी ताकत है, उसे आप दुःखितों की सेवा में, दुःख-निवारण में लगायें, जो सच्ची भक्ति है। श्रद्धा, तीर्थयात्रा वगैरह सब छोटी चीजें हैं। वह आप न करें तो भी कोई पर्वाह नहीं है। लेकिन गरीबों के, दुःखियों के दिल को तसल्ली देने का काम आपको करना चाहिए। आपकी दौलत, जमीन, अक्ल, वक्त, इल्म, सब आपको दुःखियों की सेवा में लगाना चाहिए। यह प्रेरणा देकर और भूदान ग्रामदान का काम सिर्फ माली हालत सुधारने का काम नहीं है, बल्कि यह तो हिन्दुस्तान में धर्म-स्थापना करने का, देश को सच्ची भक्ति सिखाने का काम चल रहा है—यह आपको समझाकर मैं आपसे बिदा ले रहा हूँ। 'जय जगत्'। ◆◆◆

प्रश्नोत्तर

गलत विचार से बचने का उपाय

प्रश्न—हम सब अपनी गलतियाँ महसूस करते हैं, परन्तु उन्हें सुधार नहीं पाते। हमसे यह ज्ञानपाप क्यों होता है ?

उत्तर—यही प्रश्न अर्जुन ने भगवान से पूछा था। मेरा खयाल है कि जिनमें जो ज्ञान है, वह वास्तव में ज्ञान नहीं है, याने स्पष्ट ज्ञान नहीं है। स्पष्ट ज्ञान हो तो सामने अंधकार टिक नहीं सकता है। "शायद कुछ बिगड़ा है" ऐसा हमें लगता है। याने इसमें 'शायद' है, स्पष्ट ज्ञान नहीं है। जब तक हम बुनियादी चीज को नहीं समझते हैं, तब तक स्पष्ट ज्ञान नहीं होता। बुनियादी चीज है ब्रह्मविद्या।

मैं और आप अलग हैं, इस विचार में जो अलगाव है, वह देह के कारण है, गलत है। उसीके कारण संकोच और भय पैदा होता है। वह अलगाव ही न रहे और हम सब एक हैं, इसका भान हो तो अंधकार मिट जाता है। आजकल चवथी बीमा की बात की जाती है और कहा जाता है कि वह सबको जोड़नेवाली चीज है, यह माना तो भी हम और आप अलग ही हैं, ऐसा कहा जायगा। इसलिए हम एक ही हैं, इसको समझना होगा। हमारे मन में कोई चीज आयी और हम चाहे उसे प्रकट न करें तो भी वह चीज फैलती है। अभी हमें इतना एहसास नहीं हुआ है कि जब कभी हमने मन में विचार किया, तब वह फेल हो जायगा। परन्तु विचार आगे बढ़ेगा तो मन में जो सारा चलता है, उसका भी रेकार्ड करने का यंत्र हमारे हाथ आयेगा। विज्ञान की जो प्रगति हो रही है, उसपर से मुझे लगता है कि यह भी संभव होगा। आज आप मेरा शब्द पकड़ सकते हैं। आपने रेकार्ड कर लिया तो फिर मैं इन्कार नहीं कर सकता हूँ कि मैंने फलानी चीज नहीं कही। लेकिन आज मेरे मन में क्या चल रहा है, इसको पकड़ने की युक्ति हाथ नहीं आयी है, फिर भी कल हाथ में आयेगी। इसलिए चित्त में कोई भी गलत विचार न आये, ऐसी किसी मनुष्य की शक्ति हुई तो वह दुनिया को बचा सकता है।

बापू ने कहा था कि एक भी शुद्ध सत्याग्रही हो तो वह सारी दुनिया को बचा सकता है। वह बिलकुल मिस्टिक (गूढ़) चीज मालूम होती है, परन्तु वह सही है। हमारे मन में कोई विचार आये तो हम उसे इस खयाल से छिपाते हैं कि हम सोचते हैं कि हम उसे छिपा सकते हैं, लेकिन जब यह ध्यान में आयेगा कि मन में विचार आया तो उसे छिपा ही नहीं सकते हैं, तब हम उसे प्रकट करेंगे। आज हमें लगता है कि बोलने से मामला बिगड़ जायगा, इसलिए हम बोलते नहीं, विचार मन में ही रखते हैं। लेकिन जब यह ध्यान में आयेगा कि कोई गलत विचार मन में आया तो ज्यादा बिगड़ा, बोलसे शायद थोड़ा सुधरेगा, तब हम बोलेंगे और फिर उसकी भी कोशिश करेंगे कि कोई गलत विचार मन में ही न आये। ◆★◆

अनुक्रम

१. भारत का काम करने का अपना एक तरीका है !
कटरा ६ सितम्बर '५९ पृष्ठ ६८३
२. नामस्मरण, मूर्तिपूजा आदि तो भक्ति का आरंभमात्र है....
जम्मू ११ सितम्बर '५९ " ६८४
३. गलत विचार से बचने का उपाय, (प्रश्नोत्तर) " ६८६

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी